मॉरीशस के लिए एक नया साँचा

लेखक- सी. राजा मोहन (निदेशक, इंस्टीट्यूट ऑफ साउथ एशियन स्टडीज, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

3 दिसम्बर, 2019

"दिल्ली के लिए मॉरीशस से निपटना एक बड़ी चुनौती होगी। भारत को इस विचार को त्यागने की आवश्यकता है कि मॉरीशस केवल भारत का एक विस्तार है, जो कि बिलकुल भी सही नहीं है। इसकी अपनी खुद कि एक अद्वितीय राष्ट्रीय संस्कृति और एक अंतरराष्ट्रीय पहचान के साथ एक संप्रभु इकाई है।"

मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रविंद जुगनाथ हाल के आम चुनावों में जीत के साथ सत्ता में लौटे हैं और भारत की यात्रा करने वाले हैं। अब समय आ गया है की भारत पश्चिमी हिंद महासागर में छोटे द्वीप गणराज्य को देखने के अपने दृष्टिकोण को बदलते हुए संबंधों को मजबूत बनाए।

बहुत लंबे समय से दिल्ली ने मॉरीशस को प्रवासी भारतीयों के चश्मे के माध्यम से देखा है। यह शायद प्राकृतिक था क्योंकि भारतीय मूल के लोग समुदाय इस द्वीप में एक महत्वपूर्ण बहुमत के साथ बसे हुए हैं। लेकिन अब समय आ गया है कि मॉरीशस को एक अलग नजरिए से देखा जाए।

अभी हाल ही में दिल्ली ने निश्चित रूप से हिंद महासागर में नए सिरे से महान शक्ति प्रतियोगिता के लिए मॉरीशस के रणनीतिक महत्व को देखना शुरू कर दिया है। मई 2014 में अपने पहले कार्यकाल की शुरुआत में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मॉरीशस को भारत के पड़ोस के रूप में देखा और अपने नेतृत्व को अन्य दक्षिण एशियाई नेताओं के साथ अपने समारोह में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया।

वर्ष 2015 में प्रधानमंत्री मोदी ने मॉरीशस यात्रा के दौरान एक महत्त्वाकांक्षी नीति का अनावरण किया जिसे सागर, SAGAR (सभी के लिए सुरक्षा और विकास) के नाम से जाना जाता है। यह कई दशकों में हिंद महासागर पर भारत का पहला महत्त्वपूर्ण नीतिगत बयान था। दिल्ली को इससे आगे बढ़ कर और प्रयास करने की आवश्यकता है जिससे सागर का उद्देश्य प्रभावी परिणामों में तब्दील हो सके।

लेकिन दिल्ली के लिए मॉरीशस से निपटना एक बड़ी चुनौती है। भारत को इस विचार को त्यागने की आवश्यकता है कि मॉरीशस केवल भारत का एक विस्तार है, जो कि बिलकुल भी सही नहीं है। इसकी अपनी खुद कि एक अद्वितीय राष्ट्रीय संस्कृति और एक अंतरराष्ट्रीय पहचान के साथ एक संप्रभु इकाई है। इसके नेता हिंद महासागर में एक विशेष आर्थिक केंद्र और एक आकर्षक रणनीतिक स्थान के रूप में द्वीप के विशेष स्थान के प्रति सचेत हैं। हालाँकि यह सिर्फ 1.3 मिलियन लोगों के साथ काफी छोटा देश है, लेकिन मॉरीशस का वजन इसके संख्या से काफी ऊपर है।

प्रविंद जुगनाथ की भारत यात्रा मॉरीशस की संप्रभुता के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए भारत के लिए एक अच्छा क्षण है। जनवरी 2017 में अपने पिता अनिरूद से पीएम के रूप में पदभार संभालने वाले जुगनाथ ने अब अपने दम पर सत्ता हासिल कर ली है। भले ही 61 वर्ष की उम्र में प्रवीण बहुत कम उम्र के नहीं हैं लेकिन वे एक नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो गुलाम द्वीप से समृद्ध अर्थव्यवस्था बनकर अपने असाधारण विकास पर काफी गर्व करता है।

भारत जो मॉरीशस को अपनी शर्तों पर देखता आया है, अब भावुकता से परे जाकर एक द्वीप के साथ भारत की रणनीतिक साझेदारी को बढ़ाने के लिए वित्तीय संभावनाओं और तकनीकी नवाचार से आगे बढ़ने की अपार संभावनाओं का पता लगाना चाहता है।

मॉरीशस सभी स्थानों और अपने लोगों की प्रतिभा के बारे में अधिक जाना जाता है। जैसे ही शुरुआती यूरोपीय खोजकर्ता अफ्रीकी महाद्वीप के आसपास गए और भारत के पूर्व की ओर उद्यम किया, उन्होंने मॉरीशस को 'हिंद महासागर का सितारा' कहना शुरू कर दिया। यदि पुर्तगाली और डच मॉरीशस में पैर जमाने वाले पहले थे, तो यह फ्रांसीसी ही थे जिन्होंने 18वीं शताब्दी की शुरुआत में द्वीप पर प्रभावी नियंत्रण प्राप्त किया था।

फ्रांसीसी ने चीनी बागान विकसित किए, जहाज निर्माण शुरू किया और एक नौसैनिक आधार विकसित किया। फ्रांसीसी निश्चित रूप से मॉरीशस के सामरिक महत्व को समझते थे। एक फ्रांसीसी सैनिक और औपनिवेशिक अधिकारी फेलिक्स रेनौर्ड डे सैंटे-क्रिक्स ने इस द्वीप को 'दुनिया के हर दूसरे स्थान के बीच एक केंद्रीय भौगोलिक बिंदु' के रूप में वर्णित किया था।

नेपोलियन के युद्धों के दौरान मॉरीशस पर नियंत्रण पाने वाले ब्रिटिश ने इसे एक सैन्य ठिकानों वाले द्वीप में बदल दिया जो यूरोप और भारत के बीच संचार की समुद्री रेखाओं को सुरक्षित करने में मदद करता था। इसके स्थान का स्थायी मूल्य इस तथ्य से परिलक्षित होता है कि डिएगो गार्सिया जो कभी मॉरीशस का हिस्सा था आज दुनिया में अमेरिका के सबसे बड़े विदेशी सैन्य ठिकानों में से एक बन गया है।

लेकिन मॉरीशस तक सैन्य पहुँच के मूल्य पर जोर देने में इसके भू-आर्थिक महत्व को हम खो देते हैं। 'केंद्रीय भौगोलिक बिंदु' के रूप में इस द्वीप का फ्रांसीसी विवरण हिंद महासागर में वाणिज्य और कनेक्टिविटी के लिए समान रूप से सच है। अफ्रीकी संघ, हिंद महासागर रिम एसोसिएशन और हिंद महासागर आयोग के सदस्य के रूप में मॉरीशस कई भौगोलिक क्षेत्रों के लिए महत्त्वपूर्ण है।

अगर दिल्ली एक क्षेत्रीय केंद्र के रूप में मॉरीशस के मूल्य की सराहना करता है तो ऐसे कई अवसर हैं जो भारत के समक्ष आएंगे। पहला, जैसा कि अफ्रीका में नए निवेश शुरू करने से, मॉरीशस वह जगह है जहाँ इसके काफी हिस्से को मदद मिल जाएगी। मॉरीशस भारत की अफ्रीकी आर्थिक आउटरीच का आधार हो सकता है।

दूसरा, अब तक भारत ने दक्षिण पश्चिमी हिंद महासागर के तथाकथित वैनिला द्वीपों - कोमोरोस, मेडागास्कर, मॉरीशस, मयोटे, रीयूनियन और सेशेल्स के साथ द्विपक्षीय आधार पर निपटने का प्रयास किया है। अगर भारतीय प्रतिष्ठान उन्हें एक सामूहिक मानते हैं, तो यह मॉरीशस को दिल्ली की द्वीप नीति की धुरी बना सकता है

तीसरा, मॉरीशस धुरी दक्षिण पश्चिमी हिंद महासागर में कई भारतीय वाणिज्यिक गतिविधियों की सुविधा प्रदान कर सकती है, जैसे बैंकिंग गेटवे के रूप में, भारतीय शहरों और पर्यटन के लिए उड़ानों के लिए एक केंद्र के रूप में।

चौथा, भारत तकनीकी नवाचार के लिए एक क्षेत्रीय केंद्र के रूप में मॉरीशस के विकास में योगदान दे सकता है। भारत ने आईआईटी की तरह भारत से उच्च शिक्षा सुविधाओं के लिए मॉरीशस की माँगों पर वास्तव में अब तक कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है।

पाँचवां, जलवायु परिवर्तन, सतत विकास और नीली अर्थव्यवस्था मॉरीशस और पड़ोसी द्वीप राज्यों के लिए अस्तित्वगत चुनौतियाँ हैं। इन क्षेत्रों में भारतीय पहल को बढ़ावा देने के लिए मॉरीशस सही भागीदार होगा। यह क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समुद्री वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए एक मूल्यवान स्थान भी बन सकता है।

अंत में यदि दिल्ली दक्षिण पश्चिमी हिंद महासागर में अपने सुरक्षा सहयोग का एक एकीकृत दृष्टिकोण रखता है, तो मॉरीशस इसके लिए काफी महत्त्वपूर्ण साबित हो सकता है। उदाहरण के लिए मॉरीशस में एक रक्षा सलाहकार का कार्यालय सभी द्वीप राष्ट्रों के साथ-साथ पूर्वी अफ्रीकी राज्यों की माँगों की सेवा कर सकता है।

यह सब और अधिक संभव है अगर दिल्ली मॉरीशस को एक नया और अधिक रणनीतिक भागीदार समझे। वहाँ पहुँचने का एक तरीका वनीला द्वीपों के नेताओं के साथ एक प्रारंभिक भारतीय शिखर सम्मेलन है।

GS World
Committed To Excellence

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कर कूट का प्रयोग कर सत्य कथन की पहचान कीजिए:

1. भारत द्वारा 2015 में हिन्द महासागर में सागर नीति का प्रारंभ किया गया।
2. यूरोपीय खोजकर्त्ताओं द्वारा मॉरीशस को हिन्द महासागर का सितारा नाम दिया गया।
3. मॉरीशस हिन्द महासागर रिम एसोसिएशन का सदस्य नहीं है।

कूट:-

(a) 1 और 2 (b) 2 और 3

(c) 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

Expected Questions (Prelims Exams)

1. **Consider the following statements and choose the correct answer using the code given below.**

1. Sagar Niti was launched by India in 2015 in the Indian Ocean.
2. Mauritius was named the star of the Indian Ocean by European explorers.
3. Mauritius is not a member of the Indian Ocean Rim Association.

Code:-

(a) 1 and 2 (b) 2 and 3

(c) 2 and 3 (d) 1, 2 and 3

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: 'मॉरीशस की भौगोलिक अवस्थिति उसे विशिष्ट बनाती है, किन्तु भारत के द्वारा अभी तक इस द्वीपीय देश के प्रति अपनायी गयी नीति इसकी अवस्थिति को भारत के सामरिक लाभ के रूप में नही परिवर्तित कर पायी है, जिसे अब बदलने की आवश्यकता है।' इस कथन का विश्लेषण कीजिए तथा भारत के द्वारा इस संदर्भ में क्या कदम उठाये जाने चाहिए? चर्चा कीजिए। (250 शब्द)

The geographical location of Mauritius makes it unique, but the policy adopted by India so far towards this island nation has not changed its position as India's strategic advantage, which now needs to be changed.' Analyze this statement and what steps should be taken by India in this context? Discuss. (250 words)

नोट : 1 दिसम्बर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (c) होगा।